B.A. (Hons.) part — II

DR. SUMAN LAL RAY
Assistant professor
(Guest faculty)
Deptt. of sanskrit
SRAP college, Bara
chakia, BRABU-
Muz. an.

Subject — Sanskrit

Paper — IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का अन्वय सहित हिन्दी-अनुवाद

श्लोक सं० - 21

अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम् ॥
(अभिज्ञान० - 1/21)

अन्वयः

अधरः किसलयरागः (अस्ति) बाहू कोमलविटपानुकारिणौ (स्तः) कुसुममिव लोभनीयं यौवनं च अङ्गेषु सन्नद्धम् (अस्ति)।

अनुवाद

इस शकुन्तला के अधरोष्ठ कोमल पत्तों के समान लाल और इसकी दोनों भुजाएँ कोमल-कोमल डालियों के समान मृदुल मालूम पड़ती हैं, इसके अंगों के लुभावना यौवन भी खिले हुए फूलों के समान प्रतीत हो रहा है।

— 0 —